BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

केदारनाथ सिंह की कविताओं में बिगड़ी हुई जलीय पारिस्थितिकी का चित्रण

डॉ. पंचदेव प्रसाद

सहायक प्राध्यापक एवं अध्यक्ष

हिंदी विभाग

कला एवं सामाजिक विज्ञान संकाय

अरूणाचल यूनिवर्सिटी ऑफ स्टडीज़

नामसाई, अरूणाचल प्रदेश, 792103

ईमेल :- panchdevprasa1993@gmail.com

शोध-सार – कवि केदारनाथ सिंह के कुल नौ काव्य-संग्रह में उनकी कई कविताएँ ऐसी हैं, जो पर्यावरणीय संकट को भलीभाँति दर्शाती हैं। 'पानी की प्रार्थना', 'पानी था मैं', 'नदियाँ', 'बारिश', 'बाघ' आदि कविताएँ पर्यावरण-विमर्श को ध्यान में रखकर ही लिखा गया है। जिस तरह से जीवन का आरंभ जल से हुआ है, उसी तरह शहरी सभ्यता का आरंभ भी लगभग नदी से ही हुआ है। पर यहाँ शहर नदियों के लिए बिच्छू ही साबित हुए हैं, जो जन्म के बाद धीरे-धीरे अपनी माँ को ही खा जाता है। वर्तमान समय में शहरों के किनारे वाली नदियाँ ज्यादा ही प्रदूषित हैं। इस प्रदूषण के अलावा भूजल की कमी एवं बिगड़े हुई जलीय पारिस्थितिक तंत्र का चित्रण कवि केदारनाथ सिंह ने अपनी कविताओं में सहजता एवं सरलता के साथ किया है। 'पानी की प्रार्थना' कविता जल-प्रदूषण, जल की कमी, प्राणियों का विलुप्त होना जैसे पर्यावरणीय संकटों पर प्रकाश डालती है और मानव से आगाह करती है कि उन्हें किसी भी तरह से संरक्षित रखा जाए। पानी के तीनों रूपों का समेकित विवरण प्रस्तुत करती है कवि केदारनाथ सिंह की कविता 'पानी था मैं'। यह कविता पानी के संपूर्ण अस्तित्व का चित्रांकन है। 'नदियाँ' कविता बिगड़े हुए पारिस्थितिक तंत्र को दर्शाने के साथ-साथ यह कविता जलीय पारिस्थितिकी, पेड़-पौधों, जानवरों, मछलियों और जलीय पादपों के बारे में नवीन दृष्टि प्रदान करती है।

बीज-शब्द – केदारनाथ सिंह की कविता, पर्यावरण, भूजल, जलीय पारिस्थितिक तंत्र, जल-प्रदूषण, पानी का अस्तित्व आदि।

कवि केदारनाथ सिंह (19 नवंबर, 1934 ई. – 19 मार्च, 2018 ई.) समकालीन हिंदी कविता के वो स्तंभ है, जिन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से प्रकृति की संवेदना, भूगोल विमर्श, पर्यावरणीय संकट, देशज-नागर बोध आदि को अलग ढंग से समझाने की कोशिश की है। इनका काव्य संसार 'तीसरा सप्तक' (1959 ई.) में संकलित कविताओं से शुरू होकर काव्य-संग्रह 'मतदान केंद्र पर झपकी' (2018 ई.) पर समाप्त होता है। कुल नौ काव्य-संग्रह में उनकी कई कविताएँ ऐसी हैं, जो बिगड़ी हुई जलीय पारिस्थितिकी को भलीभाँति दर्शाती हैं। 'पानी की

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

प्रार्थना', 'पानी था मैं', 'पानी से घिरे हुए लोग', 'नदियाँ", 'बारिश', 'बाघ' आदि कविताएँ जलीय पारिस्थितिकी या पर्यावरण-विमर्श को ध्यान में रखकर ही लिखा गया है।

जब से यह धरती है, तब से पर्यावरण है, पर पर्यावरण को लेकर जागरूकता लगभग 70 के दशक से है। मानव और पर्यावरण का अंत:संबंध प्रगाढ़ है। मानव ने पर्यावरण से बहुत कुछ लिया है, पर लौटाया बहुत ही कम है। अपनी आवश्यकताओं के लिए जंगल काट डाले, पर जंगल नहीं लगाए या लगाए भी तो बहुत कम। पर्यावरण में विशेष रूप से पानी और वायु का महत्व सबसे अधिक है। पर मानव ने स्वार्थवश इन दोनों को ज्यादा ही प्रदूषित किया है। धरती के सभी नगर किसी न किसी नदी के किनारे बसे हुए हैं। मानव नदी के किनारे इसलिए बसे कि उन्हें जरूरत के हिसाब से पानी मिल सके और यातायात के लिए नदियों का उपयोग कर सके। यहाँ तक सबकुछ ठीक था, पर उन्हें नदियों में मल-जल बहाने की कोई जरूरत नहीं थी, पर वे बहाकर नदियों को ही प्रदूषित कर डाला। केदारनाथ सिंह इस बात को 'नदियाँ' कविता के माध्यम से बहुत ही शानदार तरीके से रखते हैं। यथा –

"नदियाँ जो कि असल में

शहरों का आरंभ हैं

और शहर जो कि असल में

नदियों का अंत"[i]

जिस प्रकार जीवन का आरंभ जल से हुआ है, उसी प्रकार शहरी सभ्यता का आरंभ भी नदी से ही हुआ है। पर यहाँ शहर नदियों के लिए बिच्छू ही साबित हुआ है, जो जन्म के बाद धीरे-धीरे अपनी माँ को ही निगल या खा जाता है। वर्तमान समय में शहरों के किनारे वाली नदियाँ ज्यादा ही प्रदूषित हैं। प्रदूषण चाहे किसी भी रूप में हो, जल-प्रदूषण हो या वायु-प्रदूषण हो या मृदा या रेडियोधर्मी-प्रदूषण हो, सब के सब पर्यावरण के लिए संकट ही है। भूमंडलीकरण या बाजारवाद के इस दौर में ये सब आम हैं। प्रदूषण के अलावा भूजल की कमी, वन-उन्मूलन, असमय सूखा या बाढ़ का आना आदि पर्यावरणीय संकट ही कहलाते हैं। ये पर्यावरणीय संकट विकासशील मानव के आगे राक्षसी सुरसा की तरह मुँह फैलाये खड़ी है। ये राक्षसी सुरसा मानव मात्र को ही नहीं वरन पृथ्वी की समस्त प्राणियों की अवस्थितियों पर प्रश्नचिह्न लगा रखी है। अगर हनुमान जी की तरह नहीं संभले तो पर्यावरणीय संकट रूपी ये सुरसा किसी को नहीं छोड़ने वाली है। पूंजीवाद ने अपने औद्योगिकीकरण से प्रकृति या पर्यावरण का शोषण कर मुनाफा कमाने की होड़ मचा रखी है, चाहे धरती रसातल में ही क्यों न चला जाए। हालाँकि जून 1972 में स्वीडन के स्टॉकहोम में पर्यावरण शिखर सम्मेलन होने के बाद समस्त विश्व में पर्यावरण एवं उसके संकटों को लेकर चेतना जागी। ये चेतना कवि की कविताओं में भी रूपायित होने लगी। उपर्युक्त पर्यावरणीय संकटों को कवि केदारनाथ सिंह अपनी कविताओं में सहजता एवं सरलता के साथ रूपायित करते हैं। 'पानी की प्रार्थना' जल-प्रदूषण को दर्शाती है। 'पानी था मैं' में कवि ने पानी के अस्तित्व को दर्शाने की कोशिश की है। अर्थात जल-संकट की समस्या

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

को इस कविता में रूपायित किया गया है। 'पानी में घिरे हुए लोग' कविता में प्राकृतिक आपदा के रूप में बाढ़ की समस्या को दर्शाया गया है। 'नदियाँ' और 'बाघ' ये दोनों कविताएँ बिगड़े हुए पारिस्थितिक तंत्र को दर्शाती हैं।

पानी सूक्ष्म से सूक्ष्म जीवाणु से लेकर विशालकाय हाथी तक के लिए महत्वपूर्ण हैं। समस्त जीवों का विकास पानी के विशिष्ट गुणों के कारण हुआ है। बहुत सारे चीजों के निर्माण एवं विकास के मूल में पानी ही है, इसी कारण आकाश तत्व, अग्नि, वायु, मिट्टी के साथ ही पानी को भी पंचतत्व में रखा गया है। धरती पर पानी की उपस्थिति ही जीवों की उत्पत्ति का कारण है। इसलिए कवि केदारनाथ सिंह ने 'पानी की प्रार्थना' नामक कविता में पानी को प्राचीनतम नागरिक के रूप में प्रस्तुत किया है।

"प्रभु,

मैं – पानी – पृथ्वी का

प्राचीनतम नागरिक

आपसे कुछ कहने की अनुमति चाहता हूँ

यदि समय हो तो पिछले एक दिन का

हिसाब दूँ आपको"[ii]

कवि के अनुसार प्राचीनतम इस अर्थ में भी है कि पानी ने कई देवता को बनते-बिगड़ते और बनाते-बिगाड़ते देखा है। वह मानवों के द्वारा कल्पित एवं निर्मित प्रभु से भी कहीं ज्यादा प्राचीनतम हैं। यहाँ कवि ने पानी का मानवीकरण कर प्रभु से कुछ कहने की अनुमति के साथ ही पानी के द्वारा किए गए आलाप को दर्शाया है। यह सभ्यता हिसाब-किताब वाली है, इसलिए यहाँ प्रभु से हिसाब मांगी जा रही है। पानी प्रभु से वो सभी बातें बताता है, जो उसके तटों पर सिर्फ एक दिन के अंदर घटित हुआ है। तट पर एक चील का आना और पानी के सीने में अपनी चोंच गड़ाकर पानी पीना उन्हें बहुत ही सुखद लगता है। सुखद इसलिए भी कि चील पर्यावरण के लिए विलुप्त होने वाली प्राणियों में शामिल हैं। अगर वो पानी पी लें तो उसका जन्मांतर हो जाए, क्योंकि चील के कंठ से रक्त में तो रक्त से फिर एक नई चील में। इससे विलुप्त होनेवाली प्राणियों की आबादी में संवर्द्धन होगा। यहाँ कवि ने जल के अभाव से उपजे संकट के उस पहलू पर प्रकाश डाला है, जहाँ किसी का ध्यान नहीं जाता है। इतना ही नहीं पानी के तट पर हकासा-प्यासा जानवर, चिरई-चुरुङ्ग, मानुष-अमानुष आदि आते रहते हैं। यहाँ तक कि पानी को ये आभास होता है कि सूरज के सातों घोड़े भी उसके तट पर पहुँच गए हैं, पर दरअसल में वह एक चरवाहा रहता है। कविता का यह कथ्य दर्शाता है कि सचमुच में पानी समस्त जीव के लिए कितना महत्वपूर्ण है। लेकिन नासमझ इंसान इनको इतना गंदा कर देते हैं कि यह सचमुच उपयोग के लायक नहीं बच पाता है। यथा :-

"पर असल में जो आया

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

वह एक चरवाहा था

अब मैं कैसे बताऊँ प्रभु – क्योंकि आपको तो

प्यास कभी लगती ही नहीं –

कि वह कितना प्यासा था

फिर ऐसा हुआ कि उसने हड़बड़ी में

मुझे चुल्लूभर उठाया

और क्या जाने क्या

उसे दिख गया मेरे भीतर

कि हिल उठा वह

और पूरा का पूरा मैं गिर पड़ा नीचे"[iii]

सीधे-सीधे देखा जाय, तो ऐसा लगता है कि कविता का यह भाग बिगड़े हुए जलीय पारिस्थितिक तंत्र को दर्शाता है। वर्तमान में बहुत सारी नदियाँ, तालाब आदि जीव-जंतुओं के लिए प्रदूषण की वजह से उपयोगी नहीं रह गए हैं। इतना ही नहीं ये प्रदूषण जलीय पारिस्थितिक तंत्र में योगदान देनेवाले जलीय-जीवों के लिए भी नुकसानदायी साबित हो रहा है। तट पर आया हुआ प्यासा चरवाहा पानी के लिए सूरज के सातों घोड़े जैसा आभास होता है, पर उस चरवाहे में कुछ ऐसी चेतना है, जिसके कारण चुल्लूभर पानी में ही उसे प्रदूषक दिख जाता है और वह प्यासा होने के बावजूद भी पीने के लिए तैयार नहीं होता है और उसे गिरा देता है। पानी को प्रदूषित करने में उसका हाथ नहीं है, तथापि जिसका हाथ है, वह उसे कुछ कह भी नहीं सकता। चरवाहा द्वारा पानी को गिराना पानी को शर्मिंदगी महसूस कराता है। ये घटना पानी को हिलाकर रख देती है। वो बड़े ही आर्तनाद के साथ बताता है कि उसके तल में ढेर सारा कचरा है। ये कचरा ही उसके अस्तित्व के लिए संकट है। ये पानी का ही संकट नहीं है। ये समूची मानव सभ्यता के लिए भी संकट हैं। जिस दिन कचरा के भराव से पानी के स्त्रोत का भराव हो जाएगा और तालाब या नदियां सुख जाएगीं, उस दिन पूरी दुनिया समाप्त हो जाएगी। यदि धरती पर पानी थोड़ा सा भी बचा रहा तो उसके लिए युद्ध होंगे, क्योंकि कविता में एक जगह पर इस बात का जिक्र है कि पानी दुर्लभ होने के बावजूद भी किसी न किसी रहस्यमय स्त्रोत से बचे रहेंगे। इस संदर्भ में राजेंद्र सिंह ने ठीक ही कहा है – "इक्कीसवीं सदी विश्व जलयुद्ध की सदी है। इसमें खेती और उद्योगों के बीच, गाँव और शहरों के बीच तथा गरीब और अमीर के बीच लड़ाई-झगड़े बढ़ेंगे। गाँव से पलायन और शहरों में बढ़ते जन दबाब के बीच जल की जरूरत पूरी करना कठिन होगा। तब जल

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

बाजार बनेगा। जल व्यापार ही जल लूट को बढ़ाएगा। जल की लूट ही जल युद्ध में बदलेगी।"[iv] जल बाजार को लेकर कवि केदारनाथ सिंह और राजेंद्र सिंह में इस बात की समानता है। यथा :-

"पर चिंता की कोई बात नहीं

यह बाज़ारों का समय है

और वहाँ किसी रहस्यमय स्रोत से

मैं हमेशा मौजूद हूँ"[v]

स्पष्टतः 'पानी की प्रार्थना' कविता जल-प्रदूषण, जल की कमी एवं बिगड़ी हुई जलीय पारिस्थितिक तंत्र के कारण प्राणियों का विलुप्त होना जैसे पर्यावरणीय संकटों पर प्रकाश डालता है और मानव से आगाह करता है कि उन्हें किसी भी तरह से संरक्षित रखा जाए।

पानी के तीन रूप हैं – ठोस (बर्फ), द्रव(पानी) और गैस (वाष्प)। पानी के इन तीनों रूपों का समेकित विवरण प्रस्तुत करता है कवि केदारनाथ सिंह की कविता 'पानी था मैं'। यह कविता पानी के संपूर्ण अस्तित्व का चित्रांकन है। पानी जिस किसी भी वस्तु में जाता है, वह उसी का आकार ग्रहण कर लेता है। अगर कोई वस्तु नहीं मिलती है, तो अपनी धारा के बल पर उसे अपने आकार का बना लेता है, उदाहरण के लिए नदी। ये जितना महत्वपूर्ण है, ये उतना ही सहज-सुलभ भी है। विश्व की शायद ही कोई ऐसी चीज हो जो पानी से भी आम हो। इन्हीं सभी बातों का काव्यात्मक आख्यान प्रस्तुत करती है यह कविता 'पानी था मैं'। इस कविता के कथ्य के अनुसार जब पानी अपनी तीसरी अवस्था साँय-साँय (गैस) में बदल जाता है, तब वो अपने पुराने रूप को ध्यान में लाता है। यथा :-

"कभी पानी था मैं

बस इतना याद है

कि एक दिन एक कटोरे से गिरा

और जमीन ने मुझे पी लिया"[vi]

यहाँ पानी कटोरा से गिरने के बाद जमीन के माध्यम से गेहूँ की जड़ों में और जड़ों से उसके दानों में चला जाता है। दानों में कुछ दिन रहने के बाद वो साँय-साँय में बदल जाता है। पानी दो गैसों से मिलकर बनता है, जिसमें दो भाग हाइड्रोजन और एक भाग ऑक्सीजन गैस रहता है। इसी रासायनिक गुण को कवि ने इस कविता में दर्शाया है। साँय-साँय में बदलने के बाद पानी सभी मानव को अपने अस्तित्व का ज्ञान देता है। यथा –

"एक सुबह मैंने एक स्त्री को चौंका दिया

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

यह कहकर कि मैडम मुझे देखिए तो सही

मैं वही हूँ जो कल आपके गिलास में था

एक साधू से कहा –

बाबा, कभी मुझे भी तो लाओ अपने ध्यान में

आपकी अंजलि से गिर पड़ा मंत्र हूँ मैं

एक रात एक बच्चे ने मुझे सपने में देखा

और जोड़ से चिपक गया माँ के स्तनों से

वहाँ जरा-सा अब भी मौजूद था मैं

पसीने की शक्ल में !"[vii]

केदारनाथ सिंह की कविता 'नदियाँ' पर्यावरण या पारिस्थितिक तंत्र के असंतुलन की कहानी प्रस्तुत करती है। मानव सभ्यता का आरंभ नदियों के किनारे ही हुआ है। किसी भी भाषा के साहित्य में नदियों का जिक्र न हो, ऐसा नहीं हो सकता है। भारतीय साहित्य में बाल्मीकी, व्यास, कालिदास, माघ, पंडितराज जगन्नाथ, विद्यापति, तुलसीदास, सूरदास आदि कवियों ने नदी की वंदना के लिए काव्यों की रचना की। वेद और पुराणों में भी नदी की वंदना के लिए ही सूक्त या श्लोकों की रचना हुई है। हिंदी साहित्य के बहुत सारे ऐसे कवि हैं, जिन्होंने नदी पर कविता तो लिखी हैं, पर एक पर्यटक के रूप में। बहुत कम ही कवि हैं, जो पर्यावरण के एक अवयव के रूप में नदी की पारिस्थितिकीय स्थिति को दर्शाने के लिए कोई कविता लिखी हो। 'बिना नाम की नदी', 'नदी का स्मारक', 'मैंने गंगा को देखा' आदि कविताओं में केदारनाथ सिंह का पर्यटक वाली दृष्टि ही दिखती है, पर 'नदियाँ' कविता में कवि ने बखूबी रूप से पारिस्थितिकीय दृष्टि का परिचय दिया है। कविता की शुरुआत इस तरह होती है –

"वे हमें जानती हैं

जैसे जानती हैं वे अपनी मछलियों की बेचैनी

अपने तटों का तापमान

जो कि हमीं हैं

बस हमीं भूल गए हैं

हमारे घर कभी उनका भी

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

आना-जाना था"[viii]

नदी हमारे अस्तित्व से उसी तरह से परिचित हैं, जिस तरह से वे अपनी मछलियों की बेचैनी और तटों के तापमान को जानती हैं। यहाँ मानव ही भूल गया कि कभी बाढ़ के रूप में घर तक नदी का आगमन हो जाता था। आगे कवि इस बात का जिक्र करता है कि नदियों की नसों में पहाड़ों और थोड़ा सा मानवों का भी खून बहता है। हालाँकि पहाड़ से निकलनेवाली नदियाँ धरातल पर विभिन्न धाराओं में बहती हैं, जब पूरी धरती की तस्वीर ली जाए या मानचित्र पर ही देखा जाए तो नदियाँ नसों के रूप में ही दिखती हैं। उस नस में पहाड़ों और मानवों के खून के साथ-साथ वृक्षों के छाल से टपकता हुआ गरम दूध भी दौड़ता है, इसलिए वृक्ष और मनुष्य एक ही गोत्र के प्रतीत होते हैं। आगे के भाग में अपने आपको को अधिक से अधिक विकसित करने की होड़ में मनुष्यों के द्वारा नदियों के प्रति किए गए षडयंत्रों का भी पर्दाफास इसी कविता में किया जाता है। यथा :-

"पुल-

पृथ्वी के सारे के सारे पुल

एक गहरा षड्यंत्र हैं नदियों के खिलाफ़

और नदियाँ उन्हें इस तरह बर्दाश्त करती हैं

जैसे कैदी जंजीरों को"[ix]

मानव अपने स्वार्थ के लिए पुल और बड़े-बड़े बाँध बनाने के चक्कर में नदियों को इस तरह से जकड़ा हुआ है, जैसे जंजीरों से कैदी जकड़ा हुआ रहता है। लेकिन इसका प्रतिफल ये होता है कि कभी भी नदियाँ बड़ी से बड़ी तबाही लाती है और सब उलट-पुलट देती है। आजकल चलन है कि शवों को नदियों के किनारे जलाया जाता है या नदियों में ही अधजले लाशों को बहा दिया जाता है। इस बात को लेकर नदियाँ बहुत ही दुखी होती हैं, जिसका वर्णन इस कविता में है। शहरी सभ्यता का नदियों के द्वारा निर्माण और शहरों से ही नदियों का अंत बड़े ही मार्मिकता के साथ इस कविता में दर्शाया गया।

निष्कर्षतः केदारनाथ सिंह की कविताएँ जलीय पारिस्थितिकी, पेड़-पौधों, जानवरों, मछलियों और जलीय पादपों के बारे में नवीन दृष्टि प्रदान करती हैं। मोटे रूप से कहा जाए तो 'नदियाँ', 'पानी की प्रार्थना' आदि कविताएँ बिगड़ी हुई जलीय पारिस्थितिकी को दर्शाने के साथ-साथ जल-प्रदूषण, भौमजल की कमी आदि को दर्शाती हैं। 'पानी था मैं' कविता पानी के अस्तित्व एवं उसके महत्व को दर्शाती हैं। इन कविताओं के माध्यम से कवि केदारनाथ सिंह ने पर्यावरणीय संकट को बहुत ही अच्छी तरह से दर्शाया है।

BIHAR SHODH SAMAAGAM
Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed Open Access Journal
issn : 3048-6971
Vol. 2, Issue 4, October-December 2024
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/

-0-

संदर्भ-सूची

[1] सिंह, केदारनाथ. (2019). उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ. नई दिल्ली : राजकमकल प्रकाशन, पृ. सं. – 15
[ii] सिंह, केदारनाथ. (2005). *तालस्ताय और साइकिल*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ. सं. :- 9
[iii] वही. पृ. सं. :- 10
[iv] इल्लत, डॉ. प्रभाकरन हेब्बार. (2019). *पर्यावरण और समकालीन हिंदी साहित्य.* नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन. पृ. सं. :- 61
[v] सिंह, केदारनाथ. (2005). *तालस्ताय और साइकिल*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन. पृ. सं. :-11
[vi] वही, पृ. सं. – 109
[vii] वही, पृ. सं. – 109
[viii] सिंह, केदारनाथ. (2019). *उत्तर कबीर और अन्य कविताएँ*. नई दिल्ली : राजकमकल प्रकाशन, पृ. सं. – 15
[ix] वही, पृ. सं. – 14